Tender Heart High School, Sec. 33-B, Chandigarh

कक्षा- चौथी शिक्षिका- सुमन शर्मा
विषय- हिंदी साहित्य (पाठ-10 'होगा दूर अँधेरा') 1 कवि- प्रभु दयाल श्रीवास्तव
भाग 1

पुस्तक- नवतरंग-4

प्यारे बच्चो! सुप्रभात।

आज हम पाठ-10 'होगा दूर अँधेरा' नामक कविता को पढ़ेंगे। यह पाठ कक्षा-चौथी की पाठ्य पुस्तक के पृष्ठ-73 पर दिया गया है। यह कार्य आपको 4.11.24 को भेजा जाएगा।

सब बच्चे अपनी पुस्तक और अभ्यास-पुस्तिका खोलकर रख लें। मैं पढ़ाते समय पाठ से संबंधित प्रश्न पूछूँगी। इन प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिए आप तीन मिनट का समय लेंगे।

बच्चो! अब हम कविता को पढ़ते हैं :-

यह कविता कवि प्रभु दयाल श्रीवास्तव जी द्वारा रचित है। इस कविता में कवि कहते हैं कि हर व्यक्ति के जीवन में कभी कोई न कोई परेशानी अवश्य आती है। उस परेशानी का सामना शांति और साहस का परिचय देता है। एक माँ अपने बच्चों को जीवन में सदा आगे बढ़ते हुए ही देखना चाहती है।

माँ बोला सूरज से, बेटे,
हुई सुबह तुम अब तक सोए!
देख रही हूँ कई दिनों से,
रहते हो तुम खोए-खोए।

जब जाते हो सुबह काम पर,
डरे-डरे से तुम रहते हो।
क्या है बोलो कष्ट तुम्हें प्रिय,
साफ़-साफ़ क्यों न कहते हो!

DATE 4.11.24
PAGE No. 2

कक्षा- चौथी शिक्षिका- सुमन शर्मा
विषय- हिंदी साहित्य (पाठ-10 'होगा दूर अँधेरा')

बच्चो! अब मैं इन कविता की पंक्तियों का अर्थ बताऊँगी। सब बच्चे ध्यान से सुनेंगे व पढ़ेंगे।

सरलार्थ:- इन पंक्तियों में सूरज की माँ अपने बेटे को देर तक सोता हुआ देखकर बोली, "बेटा! सुबह हो गई है और तुम अब तक सोए हुए हो! बेटा! मैं कई दिनों से देख रही हूँ कि तुम खोए-खोए-से रहते हो! क्या बात है?

जब तुम सुबह अपने काम पर जाते हो, तब मैं देखती हूँ कि तुम डरे-डरे से रहते हो। मेरे प्यारे बेटे! तुम मुझे साफ़-साफ़ क्यों नहीं कहते अपना कष्ट! अगर तुम अपनी माँ को अपने कष्ट के बारे में बताओगे तो हो सकता है वह तुम्हारा दुख दूर कर सके।

बच्चो! अब मैं अगला काव्य खण्ड पढ़ूँगी फिर उसका सरलार्थ बताऊँगी।

सूरज बोला, सुबह-सुबह ही,
कोहरा मुझे ढाँप लेता है।
निकल सकूँ उसके चंगुल से,
कोई नहीं साथ देता है।

सरलार्थ:-
बच्चो! अपनी माँ की प्यार भरी बात सुनकर सूर्य उनसे बोला, "माँ! मैं क्या करूँ! जब सुबह होती है, तभी मुझे कोहरा पूरी तरह से अपने आगोश में ले लेता है अर्थात् मुझे पूरी तरह से ढाँप देता है। उसके चंगुल से निकलने में कोई मेरी मदद नहीं करता है।

माँ जब कोहरा मुझे पूरी तरह से ढक देता है तब मेरा दम घुटने लगता है। मैं थक जाता हूँ। पर हिम्मत नहीं हारता हूँ।

(पृष्ठ-2)

Scanned with CamScanner

DATE 4.11.24
PAGE No. 3

कक्षा- चौथी शिक्षिकाएँ- रोमा रानी, सुमन शर्मा
विषय- हिंदी साहित्य (पाठ- 10 'होगा दूर अँधेरा')

बच्चो! अब मैं पाठ से संबंधित प्रश्न पूछलेती हूँ। इन पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिए तीन मिनट का समय लेंगे फिर इनका उत्तर लिखेंगे।

प्रश्न-1. सूरज की माँ अपने बेटे से क्या बोली?
प्रश्न-2. सूरज के आने पर चाँद कहाँ चला जाता है?
प्रश्न-3. सुबह-सुबह कौन सूरज को ढक लेता है?

बच्चो! अब प्रश्नोत्तर लिखने का समय समाप्त हुआ। इन पूछे गए प्रश्नों के उत्तर मैं बताती हूँ।

उत्तर-1. सूरज की माँ अपने बेटे से बोली- "बेटा, सुबह हो गई है और तुम अभी तक सोए हुए हो! मैं देख रही हूँ कि तुम कई दिनों से कुछ खोए-खोए से रहते हो!

उत्तर-2. सूरज के आने पर रात का राजा चंद्रमा मैदान छोड़कर भाग जाता है। वह दिन के राजा के आगे ठहर नहीं पाता है। सूरज के आते ही वह प्रकाशहीन होजाता है।

उत्तर-3. सुबह-सुबह सूरज को कोहरे ने ढक कर रखा है। कोहरा सुबह-सुबह सूरज को पूरी तरह ढक लेता है।

अब हम पाठ को आगे बढ़ाते हुए पढ़ते हैं।

ऐसे में तो हिम्मत मेरी,
रोज़ पस्त होती रहती है।
विकट समय में बहन धूप भी,
मेरा साथ नहीं देती है।

प्रस्तुत कविता में कवि प्रभुदयाल श्रीवास्तवजी कहते हैं कि सूर्य अपना दुख अपनी माँ को

(पृष्ठ-3)

Scanned with CamScanner

4.11.24

DATE
PAGE No. 4

कक्षा - चौथी शिक्षिकाएँ - रेमा रानी, सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ - 10 'होगा दूर अँधेरा')

बताते हुए कहता है कि माँ मैं कोहरे की गिरफ़्त में पूरी तरह से हूँ। ऐसे में मेरी हिम्मत भी जवाब देती जा रही है। ऐसा मेरे साथ रोज़ हो रहा है। माँ! मेरी इतनी कठिन परिस्थिति में मेरी बहन धूप भी साथ नहीं देती है। मैं क्या करूँ? अब मैं थक और हार चुका हूँ।

बच्चो! इस कविता में कवि कहते हैं कि हमें कभी हार नहीं माननी चाहिए। हमें हर कठिनाई का डटकर सामना करना चाहिए क्योंकि दुख के बाद सुख, रात के बाद दिन अवश्य होता है। इसलिए इन कठिन परिस्थितियों में हमें हार नहीं माननी चाहिए।

बच्चो! कविता के इस भाग को हम यहीं समाप्त करते हैं। शेष भाग अगले सप्ताह पढ़ेंगे। अब मैं आपको गृहकार्य करने को दे रही हूँ -

गृहकार्य :-

सब बच्चे इस कविता को लयबद्ध तरीके से उच्च स्वर में बोलकर पढ़ेंगे व याद करेंगे। पृष्ठ - 75 पर लिखे शब्दों के अर्थ अपनी अभ्यास - पुस्तिका में लिखेंगे।

धन्यवाद।

(अंतिम पृष्ठ - 4)

Scanned with CamScanner